पारंपरिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक औषधि विज्ञान केन्द्रः पृष्ठभूमि एवं कार्य

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

पारम्परिक पशु चिकित्सा पद्धिति एवं वैकल्पिक चिकित्सा विज्ञान केन्द्र

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर-334001 (राजस्थान)

वर्तमान समय में विज्ञान एवं आधुनिक पशुचिकित्सा के विकास के साथ हम परंपरागत पशुपालन और चिकित्सा के ज्ञान की बहुमूल्य धरोहर को खोने जा रहे हैं। अपने सीमित ज्ञान और संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण आज की ग्रामीण युवा पीढ़ी पुरखों के इस ज्ञान को हेय दृष्टि से देखती है। पशुचिकित्सा के पुराने तजुर्बे पुरानी पीढ़ी के साथ-साथ समाप्त होते प्रतीत हो रहे हैं। खेद एवं चिंता का विषय है कि समय और प्रयोग की कसौटी पर खरे साबित हुए अनेक परम्परागत नुस्खे लुप्त होने जा रहे हैं।

प्राचीन काल से राजस्थान में पशुपालन जनजीवन का आधार रहा है। बीसवीं पशुगणना के अनुसार राजस्थान पशु सम्पदा की संख्या की दृष्टि से देश में दूसरे स्थान पर आता है। अपनी विशिष्ट भौगोलिक विविधताओं के साथ राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व लगभग बाईस देशी रियासतों के राजस्थान में प्राचीन काल से ही अनेक कबीलों और जन जातियों का बाहुल्य रहा है। पशुपालन हमेशा से ही राजस्थान की ग्रामीण और जनजातीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहा है।

राजस्थान की जलवायु शुष्क से उप-आर्द्र मानसूनी जलवायु है। अरावली के पश्चिम में न्यून वर्षा, उच्च दैनिक एवं वार्षिक तापान्तर, निम्न आर्द्रता तथा तीव्र हवाओं युक्त शुष्क जलवायु है। दूसरी ओर अरावली के पूर्व में अर्धशुष्क एवं उप-आर्द्र जलवायु है। विभिन्न कृषि सघनताओं वाले राजस्थान में आर्थिक और अन्य कारणों से भिन्न-भिन्न प्रकार की पारंपरिक पशु चिकित्सा पद्धति आज भी प्रचलित हैं। यह पद्धति जाति-समूह के अनुसार बदलती रहती है। इस पारंपरिक पद्धति का आधुनिक चिकित्सा से समन्वय करके और वैज्ञानिक पुष्टीकरण करके उसे जन सामान्य तक पहुँचाने से इन पारंपरिक पशुचिकित्सा तरीकों का संरक्षण किया जा सकता है और दूर दराज के क्षेत्रों में पशुपालकों को वैकल्पिक लाभ दिया जा सकता है जहाँ आज भी आधुनिक पशु चिकित्सा सुलभ नहीं है।

साथ ही इस पारंपरिक औषधियों और वैकल्पिक चिकित्सा के ज्ञान के भंडार से वैज्ञानिक भी संकेत प्राप्त करके कम समय में ही आधुनिक कसौटी पर खरे नुस्खे और औषधियाँ कम समय में विकसित कर सकते हैं। तकनीकी रूप से कहें तो 'रिवर्स फार्माकोलोजी' के द्वारा चिकित्सकीय रूप से सफल पारंपरिक औषधियों पर आधुनिक दृष्टि से अनुसंधान कर आधुनिक चिकित्सा में सफल नई दवाइयों का कम समय में विकास किया जा सकता है। सामान्यतया एक नयी दवा की सफल खोज और विपणन में लगभग बीस साल लग जाते हैं जबकि इस प्रकार से एक नई दवा सात से दस साल में बाजार में लायी जा सकती है।

रासायनिक दवाइयों के इस युग में आज भी दुनिया भर के कई पशुपालक पारंपरिक पशु चिकित्सा पद्धति का प्रयोग करते हैं। आधुनिक चिकित्सा और पशुचिकित्सा पद्धति के अलावा प्राचीन काल से आज तक विश्व के अलग-अलग भूभागों में विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों का विकास हुआ- जैसे कि चीनी परंपरागत चिकित्सा, ऐक्यूपंक्चर, अरबी चिकित्सा, यूनानी चिकित्सा, तिब्बती चिकित्सा, होम्योपैथी, आयुर्वेद या भारतीय पारंपरिक चिकित्सा, ऐक्यूप्रैशर चिकित्सा, चुम्बकीय चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा, कोरिया की पारंपरिक चिकित्सा इत्यादि-इत्यादि। इनमें से कई चिकित्सा पद्धति काफी विकसित, प्रभावी एवं अनेक रोगों का उपचार प्रदान करती हैं। यहाँ पर ये स्पष्ट करना उचित होगा की इन पारंपरिक चिकित्सा विज्ञान पद्धतियों को 'वैकल्पिक चिकित्सा' या 'आल्टरनेटिव मेडिसिन' का दर्जा दिया गया है। हमारे देश में आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी चिकित्सा पद्धतियाँ वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में आयुष मंत्रालय, भारत सरकार से मान्य पद्धतियाँ हैं।

पशुओं को स्वस्थ बनाए रखने के लिए देशी व सुलभ तरीकों का उपयोग कर, जैसे कि जड़ी बूटियों का उपयोग, आसान उपचार प्रक्रिया व पशु प्रबंधन प्रणाली से पशुओं में होने वाली अनेक बीमारियों की रोकथाम और उनका उपचार किया जा सकता है।

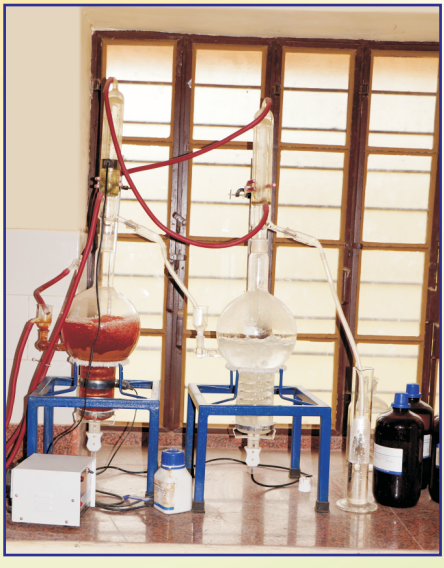

परंपरागत पशुचिकित्सा प्रणाली रासायनिक दवाओं का अच्छा विकल्प है। यह पश्चिमी पशुचिकित्सा प्रणाली के विकल्प के रूप में कार्य कर सकती है। आज भी दूर-दराज के इलाकों में आधुनिक पशु चिकित्सा प्रणाली सुलभ नहीं है। इस खाई को पाटने में यह प्रणाली अत्यंत कारगर सिद्ध होगी। यह प्रणाली विकास कार्यों को जमीनी स्तर पर पहुँचाने में मददगार सिद्ध

होगी। इसके द्वारा हम आम लोगों को उनके पारंपरिक ज्ञान व आस–पास के संसाधनों से सशक्त बनाने में सफल होंगे।

प्राचीन काल से ही यह प्रणाली हमारे पूर्वजों द्वारा अपने पालतू पशुओं के उपचार के लिए अपनाई जा रही है। परंतु स्वतन्त्रता के बाद से हमारा सारा ध्यान केवल आधुनिक/रासायनिक/ पश्चिमी चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने में ही लगा रहा। यही कारण है की हम इस प्रणाली पर पूरी तरह से निर्भर हो चुके हैं। आज भी पशुचिकित्सा का क्षेत्र दवाइयों और संसाधनों की कमी से जूझ रहा है। इस कमी को पूरा करने के उद्देश्य से राजुवास, बीकानेर में पारंपरिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक औषधि विज्ञान केंद्र की स्थापना की गई है जो कि वर्तमान में प्रचलित पशुचिकित्सा प्रणाली को और अधिक मजबूत और सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

पारंपरिक पशुचिकित्सा पद्धति और वैकल्पिक दवाइयों का ज्ञान पशुचिकित्सा महाविद्यालयों में पढ़ाये जा रहे ज्ञान से भिन्न है लेकिन पशुपालकों द्वारा प्राचीन समय से उपयोग में लाया जा रहा है। यह पद्धति वैदिक काल से परंपरागत रूप में किसानों और पशुपालकों के अनुभवों से मौखिक और प्रायोगिक रूप से पीढ़ियों से चली आ रही है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार विकासशील देशों में रहने वाले 80 प्रतिशत से अधिक लोग बीमारियों के उपचार एवं उसकी रोकथाम के लिए पारंपरिक चिकित्सा पद्धति (Traditional Medicine) पर निर्भर करते हैं। इस प्रकार की प्राचीन परंपरागत चिकित्सकीय पद्धति को 'इंपीरिकल या इथ्नो मैडिसिन' भी कहते हैं। अगर पशुचिकित्सा की बात करें तो ये पारंपरिक पशुचिकित्सा दवाइयाँ (Ethno Veterinary Medicine) सस्ती, सुलभ और प्रभावशाली तो हैं ही, साथ ही आसानी से पशुपालक इन्हें अपने स्तर पर बना भी सकता है। ये सदियों पुरानी पद्धति एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में तथा एक समूह से दूसरे समूह में भिन्न हो सकती है।

पारंपरिक पशुचिकित्सा के लाभ :

1. इथ्नो मेडिसिन के संघटक अधिकांशतया हर्बल या वनस्पति आधारित, घरों में उपलब्ध मसाले इत्यादि होने के कारण पशुपालक को सुलभ होते हैं। पशुपालक का पशु औषधि खरीदने का अतिरिक्त खर्च बचता है।
2. कई इथ्नो वेटरिनरी औषधियाँ आधुनिक औषधियों के समान प्रभावी रूप से कार्य करती हैं। जैसे कि प्राथमिक आफरा आने पर हींग, खाद्य तेल, तारपीन तेल, आदि का फॉर्मूला ब्रांडेड औषधियों जैसा ही प्रभावी रहता है।
3. इन दवाओं को बनाने की विधि आसान होती है ताकि पशुपालक स्वयं के स्तर पर इन का निर्माण और उपयोग कर सकता है।
4. इथ्नो वेटरिनरी औषधियों और चिकित्सा से दूर दराज के क्षेत्रों में पशु का उपचार या प्राथमिक उपचार हो जाता है। कई अवसरों पर इस प्रकार का उपचार बीमारी को अधिक

बढ़ने से भी रोक देता है। इस प्रकार इथ्नो मेडिसिन से आधुनिक पशुचिकित्सा पर निर्भरता कम की जा सकती है और पशु को हर बार चिकित्सालय तक ट्रांसपोर्ट से लाने ले जाने का भारी खर्च बच सकता है।

5. ये दवाइयाँ परंपरागत ज्ञान को आज के युग से जोड़ने में योगदान देती हैं ।
6. भारतवर्ष में अधिकांश इथ्नो वेटरिनरी औषधियाँ और नुस्खे हर्बल अर्थात वनस्पति आधारित हैं। आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा और हर्बल औषधियों के प्रति आज देश में रुझान पुनर्जीवित हो चुका है। अतएव पशुपालक इन पर स्वाभाविक रूप से विश्वास करते हैं। अधिकांश हर्बल औषधियों और नुस्खों को जन मानस के द्वारा निरापद भी माना जाता है।
7. पशुपालक केवल बीमारी के अंतिम चरण में ही पशु को अस्पताल लेकर आते हैं क्योंकि अस्पताल गावों से दूर है या वे दवाइयों का खर्च नहीं उठा पाते हैं। ऐसी परिस्थिति में यदि वे अपने आस पास उपलब्ध संसाधनों के औषधीय गुणों को समझ कर समय रहते इलाज के लिए उपयोग करें तो नुकसान को कम किया जा सकता है।
8. ये दवाइयाँ प्राकृतिक रूप से लाभकारी होती हैं तथा इनसे मांस उत्पादन हेतु पाले जाने वाले पशुओं में रासायनिक अवशेषों के दुष्प्रभाव की समस्या नहीं रहती है ।
9. आधुनिक रासायनिक दवाइयों की तुलना में ये प्राकृतिक औषधियाँ कहीं अधिक निरापद रहती हैं।

पारंपरिक पशु चिकित्सा के तत्व :

परंपरागत व वैकल्पिक पशुचिकित्सा पद्धति का अर्थ न केवल जड़ी-बूटियों का प्रयोग करना है बल्कि उन सभी तकनीकों व धारणाओं को शामिल करना है जो कि पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे हैं। इस पद्धति के कुछ मुख्य तत्व हैं:

1. **धारणाएँ एवं लोक प्रथाएँ :** अनेक पारंपरिक धारणाएँ प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से पशुपालन को लाभदायक बनती हैं। जैसे कि ये धारणा कि दुधारू पशु को नमक चटाने से 'ऊपरी हवा' (भूत/प्रेत बाधा) नहीं लगती है। ये अवैज्ञानिक धारणा पशु को नियमित खनिज लवणों की पूर्ति कराने में सहायक रहती है और पशु का उत्पादन बढ़ता है।
2. **पशुओं के आवासीय क्षेत्र के अनुसार उपकरण व तकनीक :** जैसे पारंपरिक पद्धति में मानक पशु प्रबंध उपकरणों एवं आवास व्यवस्था का अंधानुकरण न करते हुए सहज सुलभ विकल्पों और उपलब्ध प्रबन्ध व्यवस्था से पशुपालन किया जाता है।
3. **मानव संसाधन:** परंपरागत चिकित्सा प्रदान करने वाले जो कि अपने अनुभवों, पूर्ववर्तियों से प्राप्त ज्ञान और कौशल के आधार पर कार्य करते हैं।
4. **जानकारियाँ :** बीमारियों के लक्षण, मौसमी बीमारियाँ व चरागाह के विषय में जानकारियाँ।

पारंपरिक पशुचिकित्सा पद्धति और पारंपरिक औषधियों के ज्ञान को संरक्षित एवं

पुनर्जीवित कर वर्तमान पशुचिकित्सा व्यवस्था को बल प्रदान करने का कार्य करने के लक्ष्य को लेकर राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर ने राज्य सरकार से योजना प्राप्त कर परंपरागत पशुचिकित्सा पद्धति और वैकल्पिक औषधि विज्ञान केंद्र {Centre for Ethno Veterinary Practices and Alternative Medicine (CEVPAM)} की वर्ष 2012 में स्थापना की। यह केंद्र पशुपालक भाइयों के पशुओं के उत्तम स्वास्थ्य व उत्पादन हेतु पारंपरिक चिकित्सा द्वारा निरंतर प्रगति के लिए प्रयत्नशील है।

CEVPAM केंद्र के उद्देश्य :

(1) ऐलोपैथिक उपचार के कम लागत विकल्प खोजना।

(2) पशु स्वास्थ्य और उत्पादन के परिप्रेक्ष्य में, द्वितीयक मेटाबोलाइट से भरपूर पौधों में भेषजीय (औषधीय) गुण पाये जाने की सूचनाओं का संकलन।

(3) विभिन्न पौधों और उनके भेषजीय गुण वाले हिस्सों की पहचान और पशु चिकित्सालयों और फील्ड में पशुओं पर प्रयोग करके, क्लिनिकल ट्रायल द्वारा, चिकित्सकीय गुणों का सत्यापन।

(4) इथ्नो वेटरिनरी औषधियों के भेषजीय गुणों का प्रयोगशाला में निर्धारण एवं परिमाणन, और प्रयोगशाला के परिणामों के पुष्टीकरण हेतु फील्ड ट्रायल।

(5) इथ्नो वेटरिनरी औषधियों और पद्धतियों के प्रोटोकॉल एवं फॉर्मूलों का चिकित्सकीय उपयोग हेतु विकास।

(6) तुरंत प्रयोग हेतु तैयार इथ्नो वेटरिनरी औषधियों का, अर्क या किसी अन्य रूप में, चिकित्सकों और पशुपालकों द्वारा, चिकित्सकीय/रोगनिरोधी/अनुपूरक औषधि के रूप में विकास।

CEVPAM केंद्र द्वारा किए गए कार्य :

- पशुपालकों द्वारा दी गई इथ्नो वेटरनरी चिकित्सा और औषधियों की जानकारी को प्रारूप में भरवाकर डेटा संकलन किया जाता रहा है।
- समय समय पर पशुपालकों के भ्रमण, केंद्र में कार्यरत वैज्ञानिकों के फील्ड भ्रमण, मेलों, गोष्ठियों एवं सेमिनार में प्रतिभागिता के माध्यम से पारंपरिक पशु चिकित्सा के बारे में विचार विनिमय किए जाते हैं।
- CEVPAM के द्वारा शोध कार्य में उपयोग लिए गए वनस्पति आधारित औषधियों के स्त्रोत

की तसदीक राष्ट्रीय स्तर पर मान्य संगठन से करायी जाती है। साथ ही हरबेरियम और म्यूजियम में इन का संरक्षण किया जाता है।

- केंद्र द्वारा पशुओं में खाज और खुजली रोग, त्वचा के प्रदाह में उपयोगी दो हर्बल लोशन फॉर्मूलेशन विकसित किए गए हैं एवं परास्नातक स्तर के अनुसंधान कार्य द्वारा श्वानों एवं ऊंटों में क्लिनिकल ट्रायल करके इन दवाओं का वैज्ञानिक सत्यापन भी किया जा चुका है।
- CEVPAM द्वारा दुधारू पशुओं में थनैला रोग को विकट स्थिति में जाने से रोकथाम हेतु वनस्पति आधारित औषधियों जैसे अश्वगंधा जड़, तुलसी के पत्ते, नीम के पत्ते, काली मिर्च, खेजड़ी इत्यादि के अर्कों पर अनुसंधान कार्य करके चिकित्सकीय क्षमता और औषधि खुराक का निर्धारण किया गया है। इन औषधियों को पीड़ित पशुओं में व्यापक परीक्षण हेतु पशुपालक के स्तर पर दिया जा रहा है।
- बछड़ों में दस्त और निर्जलन से मृत्यु दर को कम करने के उद्देश्य से पशुपालक के स्तर पर रोकथाम हेतु हर्बल औषधियों जैसे बेल का फल, शीशम पत्ती, खेजड़ी की लूम, इत्यादि के अर्कों पर अनुसंधान कार्य करके चिकित्सकीय क्षमता और औषधि खुराक का निर्धारण किया गया है। इन औषधियों को पीड़ित पशुओं में व्यापक परीक्षण हेतु क्लीनिक में दिया जा रहा है।
- रोमंथी पशु में पेट में आफरा आने और बंध लगने पर हर्बल उपचार का नुस्खा CEVPAM द्वारा तैयार किया गया है। इस हर्बल पाउडर से, पीड़ित पशुओं के उपचार के आंकड़ों का एकत्रीकरण किया जा रहा है। CEVPAM के द्वारा इस नुस्खे की औषधि पाउडर एवं गोली के रूप में निर्मित कर बिक्री करने की भी योजना है।
- केंद्र के द्वारा रोमन्थी पशुओं के लिए हर्बल आधारित पाचक, आफरा निवारक और जीवनीशक्ति वर्धक मिक्सचर भी बनाया गया है।
- पंचगव्य घृत और गौमूत्र पर केंद्र द्वारा परास्नातक शोध कार्य किए जा चुके हैं।
- हर्बल परजीवीरोधी औषधि के विकास के क्रम में कद्दू के बीज, सहजन के बीज और पत्तियों एवं पपीते के बीजों के अर्क द्वारा छोटे रोमन्थी पशुओं में उपचार देने पर परजीवियों के उन्मूलन में प्रथमदृष्टया चिकित्सकीय सफलता प्राप्त हुई है। इस क्षेत्र में आगे शोध कार्य जारी है ।

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार :

प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच

निदेशक अनुसंधान

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) अवधेश प्रताप सिंह

मुख्य अन्वेशक

पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धिति एवं वैकल्पिक चिकित्सा विज्ञान केन्द्र, बीकानेर-334001

डॉ. अशोक गौड़

सहायक आचार्य

डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा

सहायक आचार्य

डॉ. तुषार महर्षि

शिक्षण सहायक